माननीय इस्पात मंत्री की अध्यक्षता में इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 05.07.2018 को इन्दौर में सम्पन्न हुई तीसरी बैठक का कार्यवृत्त

इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की तीसरी बैठक दिनांक 05.07.2018 को इन्दौर (मध्य प्रदेश) में माननीय इस्पात मंत्री, चौधरी बीरेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में भाग लेने वाले माननीय सदस्यों की सूची '**अनुबंध**' के रूप में संलग्न है।

बैठक के आरम्भ में आरआईएनएल के उप-महाप्रबंधक, श्री ललन कुमार ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि *हिन्दी विश्व भाषा बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही है। हमें अपने शासकीय और दैनिक कार्यों में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए*। **(नोट: ये ललन जी की पिछले साल बोली गई लाइनें हैं, इन्हें बदला जाए)** इसके बाद **सचिव (इस्पात) महोदया** ने **माननीय इस्पात मंत्री जी** और **इस्पात राज्य मंत्री जी** का स्वागत किया और उन्हें सुश्री नासिरा शर्मा की कृति **"कुइयांजान"** भेंट की। इसके बाद सभी उपक्रम प्रमुखों ने शॉल और पुस्तक भेंट करते हुए समिति के सभी माननीय सदस्यों का स्वागत किया।

सचिव (इस्पात) महोदया ने अपने संबोधन में कहा कि विगत चार वर्षों में इस्पात के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है जिसका एक प्रस्तुतिकरण भी बाद में दिया गया। उन्होंने कहा कि हमने हिंदी में उल्लेखनीय प्रगति की है तथा इसे हम और प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाते हुए लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हर स्तर पर ठोस कदम उठा रहे हैं। तत्पश्चात् **माननीय इस्पात राज्य मंत्री जी** ने सभा को संबोधित किया।

माननीय इस्पात राज्य मंत्री (श्री विष्णु देव साय): श्री साय ने सभी का औपचारिक स्वागत और अभिनंदन करते हुए कहा कि समिति की बैठक में आकर वे बहुत उत्साहित हैं। श्री साय ने हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए संयुक्त सचिव (राजभाषा) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन पर भी प्रसन्नता जाहिर की। मंत्रालय अपने अधीन होने वाले कार्यों में हिन्दी को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने बताया कि मंत्रालय के उपक्रम **एनएमडीसी, आरआईएनएल, एफएसएनएल, मॉयल तथा एमएसटीसी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।** उन्होंने कहा कि उपक्रमों द्वारा **हिंदी पखवाड़ा** व **हिंदी संगोष्ठी** जैसे आयोजन तथा विविध प्रोत्साहन योजनाओं द्वारा हिन्दी के प्रति और भी सकारात्मक माहौल बनाया जा सकता है।

सदस्य सचिव श्री ता. श्रीनिवास ने **पॉवर पॉइंट प्रस्तुतिकरण के जरिए** इस्पात मंत्रालय में हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति, संगणक पर हिन्दी कार्य, हिन्दी प्रशिक्षण, मिसिलों पर हिन्दी में टिप्पण/पारूपण आदि की स्थिति का आंकड़ों के माध्यम से विस्तृत विवरण दिया जिसकी माननीय मंत्रीगण व समिति के अन्य सदस्यों ने भी काफी प्रशंसा की। तदुपरान्त **श्री एन बैजेन्द्र कुमार,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (एनएमडीसी लिमिटेड), **श्री पी राय चौधरी,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड), **श्री एम.पी. चौधरी,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (मॉयल लिमिटेड), **श्री अतुल भट्ट,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (मेकॉन लिमिटेड), **श्री राजीब भट्टाचार्य,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड), **श्री बी.बी. सिंह,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (एमएसटीसी लिमिटेड) **श्री अतुल श्रीवास्तव** (निदेशक (कार्मिक), सेल लिमिटेड), **श्री एस के गोराई**, निदेशक (कार्मिक) केआईओसीएल लिमिटेड), ने अपने-अपने उपक्रमों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की स्थिति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इस **प्रस्तुतिकरण के उपरांत माननीय इस्पात राज्य मंत्री महोदय को संबोधन एवं समिति के मार्ग दर्शन हेतु आमंत्रित किया गया।**

माननीय इस्पात मंत्री (चौधरी बीरेंद्र सिंह): माननीय इस्पात मंत्री ने माननीय इस्पात राज्य मंत्री(तइस्पा) सचिव ,, ओ एस डी और समिति के माननीय सदस्यों के साथ सभी साथ अन्य- ते हुए अपने संबोधन की शुरूआत की।गत कर का स्वासदस्योंहमारी सरकार हिन्दी की प्रगति और प्रचारप्रसार में सार्थकता के साथ कार्य कर रही है। इस्पात मंत्राल-य तथा इसके सभी उपक्रम हिन्दी के प्रति जागरूक हैं और अपने में करते हैं। उपक्रमों की अपने कार्यालयों के अधिकतर कार्य हिन्दी- के प्रति जो प्रतिबद्धता हैन्दीहि, हम उसकी प्रशंसा करते हैं। भारत की समति और सामायिक संस्कृ- भाषा हमारे विचारों को प्रभावित करती है। आज के वैश्विक परिदृश्य में हमारे देश के प्रवासी भी जिस आत्मविश्वास के साथ हिन्दी का प्रयोग करते हैं, उससे यह प्रतीत होता है कि भविष्य में हिन्दी विश्व में भी एक सहज ग्राह्य भाषा होगी और नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। उन्होंने कहा कि देश भर में फैले हमारे उपक्रम हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं जिसके लिए उन्हें मंत्रालय द्वारा तथा राजभाषा विभाग द्वारा भी सम्मानित किया गया है। मेरा मानना है कि हम सरकार की राजभाषा नीति का प्रचार प्रसार करते हुए एक दिन हिंदी को राष्ट्र- पित करने मेंभाषा के रूप में स्थाजरूर कामयाब होगें। हमारा यह प्रयास एक देश, एक भाषा के हमारे सपने को भी साकार करने में सहायक होगा। उन्होंने मंत्रालय तथा उपक्रमों के सभी कर्मचारियों अधिकारियों/से अनुरोध किया कि वे सभी हिन्दी में ज्यादा से ज्यादा कार्य करें। उन्होंने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सम्मान प्राप्त करने वाले सभी उपक्रमों तथा अधिकारियों एवं कार्मिकों को शुभकामनाएँ दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में सभी उपक्रम भी हिन्दी के अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे तथा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अपने अधिकारियोंकर्मचारियों / हित एवं प्रेरित करेंगेको और अधिक प्रोत्सा। उन्होंने कहा कि विश्व पटल पर हिंदी का प्रचारप्रसार - -दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, वह दिन दूर नहीं की भाषाओं में शुमार होने राष्ट्रजब हिंदी संयुक्त , का गौरव प्राप्त करेगी, इसके लिए समुचित प्रयास किये जा रहे है। **मंत्री महोदय ने यह भी कहा कि बैठक का एजेंडा तैयार करते समय सदस्यों को सुझावों को भी शामिल किया जाय और बैठक का स्वरूप बदला जाय।** बैठक में आए सभी अतिथियों का धन्यवाद और पुन: अभिनन्दन करते हुए उन्होंने अपने सम्बोधन को विराम दिया उनका आह्वान किया कि वे बैठक में खुलकर अपने विचार व सुझाव रखें ताकि उनके उपयोगी व सार्थक सुझावों से हमें मंत्रालय व इसके देश भर में फैले उपक्रमों में राजभाषा हिंदी के बेहतर ढंग से आगे बढ़ाने में सहायाता मिलें।

माननीय **श्री गोपाल पहाड़िया** ने माननीय इस्पात मंत्री एवं माननीय इस्पात राज्य मंत्री सहित सभागार में उपस्थित सभी अधिकारियों का अभिनंदन करते हुए कहा कि **ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि उपक्रमों में होने वाली कार्यशालाओं में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों को भी बुलाया जा सके। उन्होंने कहा कि** हिंदी सलहाकार समिति की बैठक वर्ष में कम-से-कम दो बार होनी चाहिए तथा उन्होंने हिंदी टिप्पण का प्रतिशत बढ़ाए जाने की जरूरत पर बल दिया और ही यह भी कहा कि जिन निगमों में हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाना शेष हैं, उसे शीघ्र पूरा किया जाए। सदस्यों को पर्यवेक्षक के रूप में नामित किया जाए। सेल के पत्राचार में सुधार किए जाने की आवश्यकता है और वहाँ प्रायोगिक कार्यशाला होनी चाहिए।

माननीय **देशपाल सिंह राठौर** ने भी माननीय इस्पात मंत्री एवं माननीय इस्पात राज्य मंत्री सहित सभागार में उपस्थित सभी अधिकारियों का अभिनंदन करते हुए कहा कि हिंदी के पदों पर हिंदी अधिकारियों को ही नियुक्त किया जाए, नामित अधिकारियों को हिंदी अधिकारी न माना जाए। उन्होंने हिंदी अनुवाद में

सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग करने पर बल दिया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि हिंदी सलाहाकार समिति की बैठक वर्ष में कम-से-कम दो बार आवश्य होनी चाहिए। उन्होंने लक्ष्य प्राप्त करने की समय-सीमा तय करने का अनुरोध किया और कहा कि मंत्रालय व उपक्रमों की सभी वेबसाइट प्रथमत: हिंदी में खुलें।

माननीय **श्री गोपाल कृष्ण फरलिया** ने माननीय इस्पात मंत्री एवं माननीय इस्पात राज्य मंत्री सहित सभागार में उपस्थित सभी अधिकारियों का अभिनंदन करते हुए कहा कि हिंदी के पदों पर नामित अधिकारियों / कर्मचारियों को न गिना जाए। तकनीकी अधिकारियों और कर्मचारियों को इन पदों में शामिल न करें। केवल हिंदी संबंधी अधिकारियों/कर्मचारियों को ही हिंदी पदों पर रखा जाए। हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों/ अधिकारियों की गोपनीय रिपोर्ट में इसकी प्रविष्टि की जाए। उन्होंने सुझाव दिया कि अधिकारीगण मूल डिक्टेशन हिंदी में दें तो हिंदी को बढ़ावा मिलेगा। समिति की बैठक 'ख' या 'ग' क्षेत्र में अर्थात् हिंदीतर भाषी क्षेत्र में आयोजित की जानी चाहिए।

माननीय श्री चन्द्रकान्त जोशी ने माननीय इस्पात मंत्री एवं इस्पात राज्य मंत्री और सभागार में उपस्थित अन्य सभी का स्वागत करते हुए कहा कि उपक्रमों की कार्यशालाओं में बैनर हिंदी में होने चाहिए। प्रावधान के अनुसार कुल व्यय का 50 प्रतिशत हिंदी पुस्तकों की खरीद पर व्यय किया जाए तथा इंटरनेट पर अपलोड की जाने वाली सामग्री पीडीएफ की बजाए यूनिकोड में करने की सलाह दी।

माननीय श्री बंडोपंत पाटिल ने भी माननीय इस्पात मंत्री एवं माननीय इस्पात राज्य मंत्री जी के साथ-साथ सभागार में उपस्थित अन्य सभी अधिकारियों व सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि बैठक का एजेंडा कम-से-कम 10-15 दिन पूर्व उपलब्ध कराये जाने के साथ-साथ हिंदी सलाहकार समिति की वर्ष में कम से कम दो बैठकें आयोजित करने का सुझाव दिया एक बैठक दिल्ली में और दूसरी अन्य जगह जहां हिंदी का प्रचार-प्रसार कम हो, अर्थात् हिंदीतर भाषी क्षेत्र में होनी चाहिए। उपक्रमों में कार्यशालाओं के आयोजन पर हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों को भी आमंत्रित किया जाए और स्थानीय समाचार पत्रों में भी बैइक के निर्णयों के बारे में जानकारी दी जाए।

माननीय सुश्री क्रांति कनाटे न **हिन्दी को राजभाषा नहीं राष्ट्रभाषा बनाया जाए** – कि उत्कृष्ट वाक्य से अपने संबोधन की शुरूआत की। उन्होंने हिन्दी-हिन्दीतर का भेद मिटाना जरूरी है, व्यावहारिक हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि **हिंदी को 'क' 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में न बॉटा जाए।** उन्होंने कहा कि देश का नाम हमेशा **भारत** लिया जाए न कि **इंडिया।**

माननीय श्री त्रिभुवन नाथ शुक्ल जी ने अपने संबोधन में कहा कि हिन्दी के प्रयोग में एकरूपता तथा **वर्तनी का मानकीकरण** होना चाहिए। हिन्दी वर्तनी के मामले में 90 प्रतिशत मंत्रालय ने पालन किया है लेकिन, 10 प्रतिशत के लिए अधिक जागरूकता की आवश्यकता है। हिंदी को राजभाषा के स्थान पर राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए एक विधेयक लाने की भी सलाह दी गई। उन्होंने हिंदी में सरलता और सहजता का उपयोग करने की सलाह दी। उपक्रमों तथा उनके कार्यालयों में हिंदी पदों को भरा जाना चाहिए, उन्होंने 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों को भी शामिल करने का अनुरोध किया। **सभी हिंदी के रिक्त पद भरे जाने चाहिएं। सरल भाषा में चर्चा होनी चाहिए।** उन्होंने **किये** शब्द के स्थान पर किए लिखने और **करा, करी** के स्थान पर **किया** शब्द प्रयोग करने पर बल दिया।

डॉ. श्रीराम परिहार ने मंत्रालय और उपक्रमों में हिन्दी प्रयोग में हुई **सकारात्मक बढ़ोत्तरी** का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि **उपक्रमों के नाम का हिंदी अनुवाद होना चाहिए** और तदनुसार उसका शॉर्ट फार्म भी होने चाहिएं। हिंदी पत्रिकाओं में कम आयुवर्ग वाले युवाओं से लेख आमंत्रित कर उन्हें प्रकाशित करवाया जाए ताकि वे हिंदी में काम करने के लिए और अधिक प्रेरित हों। उन्होंने सुझाव दिया कि अगस्त, 2018 में मॉरीशस में आयोजित होने वाले 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में मंत्रालय, उपक्रमों तथा समिति के सदस्य शामिल हों ताकि वहां भाषा और संस्कृति पर प्रस्तुतिकरण दे सकें और हिन्दी को उल्लेखनीय बढ़ावा मिल सके। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर भाषा और संस्कृति के कार्यों में वर्तमान हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों को बुलाया जाना चाहिए और समिति की बैठकें वर्ष में कम-से-कम दो बार होनी चाहिएं, जिसमें से एक **ग क्षेत्र** में हो। उन्होंने **त्रिभाषा फॉर्मूला** को अपनाने तथा राजभाषा अधिकारियों को **सरल भाषा** में **हिंदी अनुवाद** करने की सलाह दी

माननीय श्री प्रभात वर्मा ने कहा कि **गॉधी जी 1918 में इंदौर में मानस भवन का उद्घाटन किया था। उन्होंने मेकॉन मुख्यालय तथा उनके कार्यालयों में 1989 से किसी हिंदी अधिकारी की नियुक्ति नहीं होने पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके किसी भी कार्यालय में नियमित राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति के बारे वर्तमान स्थिति जाननी चाही। सेल के कार्यालयों में राजभाषा अधिकारियों की स्थिति पर असंतोष ब्यक्त किया। उन्होनें यह भी कहा कि नामित अधिकारी को नियिमत अधिकारी के पदों पर नियुक्त नहीं किया जा सकता है। नामित अधिकारी तदर्थ रूप से कार्य करते हैं। उन्होंने** हिंदी संगोष्ठी ज्यादा-से- ज्यादा करने की सलाह भी दी। उन्होंने हिंदी पत्राचार के लक्ष्य को 100 प्रतिशत तक करने की सलाह दी। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों को भी शामिल करने का अनुरोध किया।

माननीय श्री विकास दवे ने कहा कि **हिंदी सलहाकार समिति की बैठक वर्ष में कम-से-कम दो बार अवश्य होनी चाहिए। एक बैठक दिल्ली में और दूसरी 'ग' क्षेत्र में जहां हिंदी का प्रचार-प्रसार कम होता हो**। उन्होंने अनुबंध 1-6 तक की अच्छी स्थिति के लिए उपक्रमों को बधाई दी। शेष कार्यों पर काम करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने वेबसाइट पर दी जाने वाली जानकारियों को अद्यतन करने की सलाह भी दी, इसके लिए एजेंसियों को निर्देश देने का अनुरोध किया। उन्होंने आगे कहा कि वेबसाइट सर्वप्रथम हिंदी में खुले, समिति के गतिविधियों के चित्र भी वेबसाइट पर अपलोउ किए जाने चाहिएं। **शेष कार्यालयों को अधिसूचित किया जाए**। उन्होंने एमएसटीसी में हो रहे हिन्दी कार्यों की प्रशंसा की और प्रशिक्षण का कार्य जल्द से जल्द पूरा किए जाने पर बल दिया। उन्होंने मेकॉन में हिन्दी पुस्तकों की खरीद की स्थिति संतोषजनक न होने पर अप्रसन्नता जाहिर की और उसे ठीक करने का सुझाव दिया। उन्होने **मेकॉन में कई वर्षो से कार्य कर रहे अस्थाई और नामित राजभाषा अधिकारियों को नियमित किये जाने की समय-सीमा जाननी चाही। उन्होंने पूछा कि मेकॉन में स्थायी राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति संभव है? उन्होंने कहा कि नामित अधिकारी या कर्मचारी राजभाषा के पदों पर कार्य नहीं कर सकते क्योंकि वे उनकी योग्यता पद के तदनुरूप नहीं होती। अनुबंध या संविदा पर तैनात हिंदी अधिकारी की नियुक्ति केवल काम चलाऊ व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि जिन कार्यालयों में 25 से अधिक नियमित कर्मचारी और अधिकारी हैं, वहाँ नियमानुसार नियमित हिंदी अधिकारी रखे जाने चाहिएं। काम चलाने के लिए संविदा पर नियुक्त हिंदी अधिकारी को तब**

तक नियमित हिंदी अधिकारी न माना जाए जब तक कि उसे इस पद पर नियमित नियुक्ति नहीं दी जाती। उन्होंने तीन वर्षों का तुलनात्मक आंकड़े देने की सलाह दी।

सदस्य सचिव (श्री ता. श्रीनिवास) ने समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण सुझावों पर विशेष ध्यान देने का आश्वासन दिया। भविष्य में संगोष्ठियों में सदस्यों को सुविधानुसार शामिल करने का आश्वासन दिया। उन्होंने आश्वासन दिया कि बैठक की कार्यसूची की सॉफ्ट कॉपी जल्द मिले - इसकी भी व्यवस्था की जाएगी। तत्पश्चात् उन्होंने माननीय इस्पात मंत्री जी से अनुरोध किया कि वे राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने वाले उपक्रमों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों को **"इस्पात राजभाषा सम्मान"** और **"प्रशस्ति-पत्र"** प्रदान करें, जिस पर माननीय इस्पात मंत्री जी ने निम्नानुसार पुरस्कार प्रदान किए:-

क्र.सं.	इस्पात राजभाषा सम्मान	उपक्रम का नाम
1	'इस्पात राजभाषा सम्मान' -प्रथम पुरस्कार	एनएमडीसी लिमिटेड, हैदराबाद
2	'इस्पात राजभाषा सम्मान' -द्वितीय पुरस्कार	आरआईएनएल लिमिटेड, विशाखापट्टणम
3	''इस्पात राजभाषा सम्मान' -तृतीय पुरस्कार	एफएसएनएल लिमिटेड, भिलाई
4	'इस्पात राजभाषा सम्मान' विशिष्ट कार्य-निष्पादन के लिए	मॉयल लिमिटेड, नागपुर
5	'इस्पात राजभाषा सम्मान' विशिष्ट कार्य-निष्पादन के लिए	एमएसटीसी लिमिटेड, कोलकाता

हिंदी अधिकारियों / कर्मचारियों को 2017-18 के लिए दिये गए पुरस्कार

क्र.सं.	'इस्पात राजभाषा कार्यान्वयन सम्मान'	उपक्रम का नाम
1	श्री रूद्र नाथ मिश्र सहायक, महाप्रबंधक	एनलिमिटेड .सी.डी.मए., हैदराबाद
2	श्री ललन कुमार, उप-महाप्रबंधक	राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्टनम
3	श्री छगन नागवंशी, राजभाषा अधिकारी	फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड, भिलाई
4	श्रीमती पूजा वर्मा, राजभाषा अधिकारी	मॉयल लिमिटेड, नागपुर
5	श्री एम पी श्रीवास्तव, महाप्रबंधक	एमएसटीसी लिमिटेड, कोलकाता
6	श्री डी पी डंगवाल, सहायक महाप्रबंधक	सेल, नई दिल्ली
7	श्री वी चन्द्रशेखर उड़करे, राजभाषा अधिकारी	केआईओसीएल, बेंगलुरू

इस्पात मंत्रालय के उपक्रमों तथा संयंत्रों के राजभाषा अधिकारी/ कर्मचारी

8	डॉ. बी एम तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)	भिलाई स्टील प्लांट, सेल, भिलाई
9	श्री हीरा बल्लभ शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)	दुर्गापुर इस्पात संयंत्र, दुर्गापुर
10	श्री सतीश कुमार बरियार, उप प्रबंधक (राजभाषा)	बोकारो स्टील प्लांट, बोकारो
11	श्री त्रिलोचन दास, व. उप-महाप्रबंधक	मॉयल लिमिटेड, नागपुर
12	श्री कैलाश नाथ यादव, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)	रॉ मेटेरियल्स डिविजन, सेल, कोलकाता
13	श्री अजय शंकर मिश्र, वरिष्ठ कार्यपालक सहायक	रॉ मेटेरियल्स डिविजन, सेल, कोलकाता
14	श्री एस के सनोडिया, निजी सहायक (राजभाषा)	एन.एम.डी.सी. लिमिटेड, हैदराबाद
15	श्री डी चन्द्रशेखर, उप प्रबंधक (ईपीएस)	फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड, भिलाई
16	श्री अनिल वाय. घरडे, सहा. हिंदी अनुवादक	मॉयल लिमिटेड, नागपुर
17	श्री गोपाल, वरिष्ठ सहायक (राजभाषा)	आरआईएनएल, विशाखापट्टनम
18	श्री धीरेन्द्र कुमार झा, निजी सहायक	एमएसटीसी लिमिटेड, कोलकाता

संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने सदस्यों को धन्यवाद देते हुए उनके द्वारा सुझाए गए विचारों के अनुपालन का अश्वासन दिया तथा हिन्दी कार्मिकों तथा सम्बद्ध उपक्रमों को धन्यवाद दिया। उन्होंने आयोजन में शामिल मॉयल लिमिटेड, आरआईएनएल लिमिटेड के प्रतिनिधियों का विशेष रूप से धन्यवाद किया। सचिव (इस्पात) महोदया का विशेष धन्यवाद दिया जिनके मार्गदर्शन से यह सफल आयोजन हो पाया।

तदुपरांत, उपक्रमों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं (सेल की **इस्पात भाषा भारती**, एफएसएनएल की **दर्पण** तथा एमएसटीसी की **संगति**) का माननीय इस्पात मंत्री एवं माननीय राज्यमंत्री व सचिव (इस्पात) द्वारा विमोचन किया गया।

अंत में, अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न घोषित की गई।

अनुबंध

इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दिनांक 05.07.2018 को नई दिल्ली में हुई बैठक में उपस्थित सदस्यों की सूची

	सर्वश्री/सुश्री	अध्यक्ष
	चौधरी बीरेन्द्र सिंह, इस्पात मंत्री	उप-अध्यक्ष
	विष्णु देव साय, इस्पात राज्य मंत्री	गैर सरकारी सदस्य
	क्रांति कनाटे	गैर सरकारी सदस्य
	डॉ. श्रीराम परिहार	गैर सरकारी सदस्य
	डॉ. बंडोपंत पाटील	गैर सरकारी सदस्य
	प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल	गैर सरकारी सदस्य
	डॉ. विकास दवे	गैर सरकारी सदस्य
	गोपाल कृष्ण फरलिया	गैर सरकारी सदस्य
	प्रभात वर्मा	गैर सरकारी सदस्य
	चन्द्रकांत जोशी	गैर सरकारी सदस्य
	देशपाल सिंह राठौर	विशेष आमंत्रित
	गोपाल सिंह पहाडिया	विशेष आमंत्रित

इस्पात मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग के अधिकारीगण

	सर्वश्री/सुश्री	
·	डॉ. (श्रीमती) अरूणा शर्मा, सचिव (इस्पात)	सदस्य
·	श्री विनय कुमार, विशेष कार्य अधिकारी	उपस्थित
·	टी. श्रीनिवास, संयुक्त सचिव	सदस्य-सचिव
·	डां. शकुन्तला, मुख्य लेखा नियंत्रक	उपस्थित
·	पलि कंडू, उप महानिदेशक	उपस्थित
·	प्रमोदिता सतीश, आर्थिक सलाहकार	उपस्थित
·	आनन्द कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित
·	आस्था जैन, सहा-निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित

इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के अध्यक्ष/अधिकारीगण

सर्वश्री/सुश्री		
21.	एन. बैजेन्द्र कुमार, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, एन.एम.डी.सी. लिमिटेड	सदस्य
22.	प्रबीर राय चौधरी, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि.	सदस्य
23.	एम.पी. चौधरी, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, मॉयल लिमिटेड	सदस्य
24.	बी.बी. सिंह, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, एमएसटीसी लिमिटेड	सदस्य
25.	अतुल भट्ट, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, मेकॉन लिमिटेड	सदस्य
26.	राजीव भट्टाचार्य, प्रबंध निदेशक, एफ.एस.एन.एल. लिमिटेड	सदस्य
27.	अतुल श्रीवास्तव, निदेशक (कार्मिक), स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	प्रतिनिधि
28.	स्वपन कुमार गोराई, निदेशक, के.आई.ओ.सी.एल. लिमिटेड, बेंगलूरू	प्रतिनिधि
29.	के.सी. दास, निदेशक (कार्मिक) अध्यक्ष एवं सह-प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड	उपस्थित
30.	जी.बी.एस. प्रसाद, निदेशक (कार्मिक) राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड	उपस्थित
31.	एम.पी. श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, एम.एस.टी सी. लिमिटेड	उपस्थित
32.	एस राजेंद्र, महाप्रबंधक, के.आई.ओ.सी.एल. लिमिटेड	उपस्थित
33.	ललन कुमार, उप-महाप्रबंधक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि.	उपस्थित
34.	छगन लाल नागवंशी, राजभाषा अधिकारी, एफ.एस.एन.एल. लिमिटेड	उपस्थित
35.	रूद्रनाथ मिश्र, सहायक महाप्रबंधक, एनएमडीसी लिमिटेड	उपस्थित
36.	डी.पी. इंगवाल, सहा. महाप्रबंधक, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	उपस्थित
37.	टी. दास, व.उप-महाप्रबंधक (राजभाषा), मॉयल लिमिटेड	उपस्थित
38.	संजीव कुमार, महाप्रबंधक, मेकॉन लिमिटेड, रॉची	उपस्थित